International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(5): 213-215

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(5): 213-215
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-07-2021
Accepted: 22-08-2021

निर्मला लोहार
कहार भोईवाड़ा, बोडी होली,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
निर्मला लोहार
कहार भोईवाड़ा, बोडी होली,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

रत्नावली नाटिका की सामाजिक पृष्ठभूमि

निर्मला लोहार

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के इतिहास में सम्राट हर्षवर्धन का प्रमुख स्थान है। हर्ष नाट्य रचना में संस्कृत नाट्य परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखते है। प्रणय नाटिकाओं के रचयिता के रूप में हर्ष का स्थान बहुत ही सम्मानित है। हर्ष की रचनाओं से उस युग की सांस्कृतिक तथा सामाजिक परम्परा के बारे में पता चलता है। रत्नावली, प्रियदर्शिका तथा नागानन्द सम्राट हर्षवर्धन की प्रसिद्ध रचनायें हैं।

रत्नावली नाटिका कवि श्रीहर्षवर्धन की सुप्रसिद्व रचना है। रत्नावली अन्तःपुर की रोमांचक प्रणय नाटिका है। रत्नावली नाटिका में मदनमहोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस सामाजिक उत्सव में स्त्री–पुरूष स्वच्छन्द रूप से भाग लेते है। इससे स्पष्ट परिलक्षित होता है कि उस समय भी समाज में अनेक उत्सव प्रचलित थे, जो सामुहिक रूप से मनाए जाते थे। स्त्री और पुरूष स्वच्छन्दतापूर्वक एक साथ भाग लेते थे। उस युग में मदनमहोत्सव एक प्राचीन उत्सव था। जिसे वर्तमान समय में वसंत पंचमी तथा होलिकोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस नाटिका में मदनमहोत्सव का रमणीय वर्णन किया गया है।

> मधुमत्तकामिनीजनस्वयंग्राहगृहीतंश्रृंगकजलप्रहारनृत्यन्नागरजनजनितकौतूहलस्य समन्ततः शब्दायमानमर्दलोद्दा– मचर्चरीशब्दमुखररथ्यामुखशोभिनः प्रकीर्णपटवासपुजपिजरितदशदिशामुखस्य सश्रीकतां मदनमहोत्सवस्य।[1]

अर्थात् अब मदिरापान से मतवाली कामिनियों के द्वारा स्वयं हाथों से पकड़ी हुई पिचकारियों द्वारा जल प्रहार से इधर–उधर उछल–कूद करते हुए नागरिक जनों के कौतूहल तथा चारों ओर ध्वनि मृदंगों के बढ़ते हुए चर्चरी से मुखरित कुंजों के मध्य से निकलने वाली पगदण्डियों के निकास तथा उड़ाये गये गुलालों के ढेर से पीली बनी हुई दसों दिशाओं वाले उस मदन महोत्सव की शोभा रमणीय है।

कौशाम्बी नगरी चारो तरफ अबीर और गुलाल से पीली–पीली सी दिखलाई देती है। स्त्री और पुरूष दोनों एक दूसरे पर पिचकारी से रंग डालते है जिससे फर्श लाल रंग से रंगा हुआ प्रतीत होता है।

> कीर्णैः पिष्टातकौघैः कृतदिवसमुखैः कुङकुमक्षोदगौरै–
> र्हेमालंकारभाभिर्भरनमितशिखैः शेखरैः कैङिकरातैः।
> एषा वेषाभिलक्ष्यस्वविभवविजिताशेषवित्तेशकोशा
> कौशाम्बी शातकुम्भद्रवखचितजनेवैकपीता विभाति।।[2]

अर्थात् केसर रज से पीले, प्रातःकालीन छटा को उपस्थित करने वाले, बिखेरे गये सुगन्धित चूर्ण (अबीर, गुलाल), स्वर्णाभूषणों की कान्ति वाले अशोक पुष्पों के भार से झुकी हुई चोटियों, सोने के पानी से पुती व्यक्तियों (पीतवस्त्राभूषण युक्त) एवं वेष–भूषा से अभिलक्ष्य अपने वैभव से कुबेर के सम्पूर्ण खजाने को जीते हुए यह कौशाम्बी नगरी पील–पीली सी दिखाई दे रही है।

स्त्रियाँ नागरपुरूषों पर पिचकारी लेकर रंग डालती थी तथा चारो और सिन्दूर की कीचड़ से फर्श लाल हो जाते थे–

[1] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 17
[2] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 1/10 पृष्ठ 18

धारायन्त्रविमुक्तसंततपयःपूरप्लुते सर्वतः
धारायन्त्रविमुक्तसंततपयःपूरप्लुते सर्वतः
सद्यः सान्द्रविमर्दकर्दमकृतक्रीडे क्षणं प्राङ्गणे।
उद्दामप्रमदाकपोलनिपतत्सिन्दूररागारूणैः
सैन्दूरीक्रियते जनेन चरणन्यासैः पुरः कुट्टिमम्।।[3]

अर्थात् चारों ओर पिचकारियों से छोड़े गये निरन्तर जलधारों से व्याप्त, घनी उछल –कूद से उत्पन्न हुई कीचड़ में किये गये खेल वाले आँगन में मतवाली स्त्रियों के भाल पर गिरते हुए सिन्दूर के रंग से लाल बने पद चिह्नों से लोग सामने के फर्श को क्षण भर में सिन्दूर वर्ण बनाये दे रहे है।
सागरिका और सुसंगता के व्यवहार से तत्कालीन समाज में स्त्रियों की वेशभूषा, श्रृंगार तथा मनोविनोद के साधनों पर भी प्रकाश पड़ता है। स्त्रियाँ नृत्य एवं गायन में बहुत रूचि रखती थी और इन कलाओं का उत्सवों में समाज के सामने प्रदर्शन भी होता था। मदनमहोत्सव पर वासवदत्ता की परिचारिकाएँ नृत्य, गायन इत्यादि का प्रदर्शन करती है।

स्रस्तः स्रग्दामशोभां त्यजति विरचितामाकुलः केशपाशः
क्षीबायां नूपुरौ च द्विगुणतरमिमौ क्रन्दतः पादलग्नौ।
व्यस्तः कम्पानुबन्धादनवरतमुरो हन्ति हारोऽयमस्याः
क्रीडन्त्याः पीडयेव स्तनभरविनमन्मध्यभंगानपेक्षम्।।[4]

अर्थात् मतवाली स्तनों के भार से झुकी हुई कमर के टूटने की अपेक्षा न कर, क्रीडा करती हुई सेविका मदनिका का ढीला अस्त व्यस्त केशपाश सप्रयत्न धारण की गई पुष्प माला की शोभा का त्याग कर रहा है। पैरों में पहने हुए यह दोनों बिछुए पहले से दुगुना बज रहे है। काँपने के कारण डोलता हुआ यह हार निरन्तर पीडा से वक्षःस्थल को पीट सा रहा है।
स्त्रियाँ चित्रकला में भी रूचि रखती थी। सागरिका द्वारा उदयन का चित्र और सुसंगता द्वारा सागरिका का चित्र बनाया जाता है। ये दोनों की चित्र अत्यन्त कलात्मक एवं सजीव जैसे प्रतीत होते है। इनमे मनोभावों का भी अंकन किया गया है। यद्यपि मेऽतिसाध्वसेन वेपतेऽयमतिमात्रमग्रहस्तस्तथापि नास्ति तस्य जनस्यान्यो दर्शनोपाय इति यथातथालिख्यैनं प्रेक्षिष्ये।[5] यद्यपि अत्यन्त घबराहट से मेरा हस्ताग्र भाग काँप रहा है तथा उस प्रियतम के दर्शन का कोई अन्य उपाय नहीं है। अतः जैसे–तैसे चित्र आदि उपाय से इनको देखूँगी।
सागरिका उदयन का चित्र बनाती है। उस चित्र को देखकर सुसंगता उदयन के चित्र के पास ही सागरिका का चित्र बना देती है। **या**दृशस्त्वया कामदेव आलिखितस्तादृशी मया रतिालिखिता।[6] जैसे तुमने कामदेव को चित्रित किया, उसी प्रकार मैने रति को (कामदेव की पत्नी) चित्रित कर दी है।
स्त्रियाँ अनेकविध श्रृंगार करती थी। केशों को विविध प्रकार से बांधकर उसमें पुष्प रचना करती थी। चरणों में लाक्षारस, हाथों में कंगन, कानों में कर्णाभरण, गले में रत्नावली तथा पैरों में नुपुर धारण करती थी। सागरिका की रत्नमाला बहुमूल्य एवं रत्नों की माला है जिससे उसकी पहचान होती है।
हर्षवर्धन के समय में पर्दा प्रथा पचलित थी। स्त्रियाँ प्रायः पर्दा करती थी। वासवदत्ता घूँघट निकालकर उदयन से मिलती है। विवाहित पत्नी का घर में श्रेष्ठ स्थान था। वासवदत्ता सागरिका और उदयन के प्रेम को जानकर सागरिका को कैद कर देती है। उदयन उससे बचाने में असमर्थ होता है। इससे सिद्ध होता है कि कुलवधु बहुत सम्मानित थी। उसका पति के उपर पूर्ण अधिकार था वह पति पर अंकुश भी लगा सकती थी।

आताम्रतामपनयामि विलक्ष एष
लाक्षाकृतां चरणयोस्तव देवि मूर्ध्ना।
कोपोपरागजनितां तु मुखेन्दुबिम्बे
हर्तु क्षमो यदि परं करूणा मयि स्यात्।।[7]

अर्थात् हे देवि! अपने किये हुए अपराध से दुःखी मैं उदयन तुम्हारें चरणों पर गिरता हुआ शिर से तुम्हारे चरणों की महावर की हल्की लालिमा को पोछं रहा हूँ। तुम्हारे मुख रूपी चन्द्रमण्डल पर क्रोध रूपी राहु से उत्पन्न की गई लालिमा को तो तभी पोंछने में समर्थ हो सकता हूँ। यदि मुझ अपराध किये हुए पर केवल दया हो जाये।
तत्कालीन समाज में लोग तन्त्र–मन्त्र पर विश्वास करते थे। ऐन्द्रजालिक जनता को जादू के खेल दिखाकर उनका मनोरंजन करते थे। उदयन के दरबार में उज्जयिनी से एक ऐन्द्रजालिक आता है। वह अपना जादू दिखाकर उदयन और वासवदत्ता को प्रसन्न करता है।

एष ब्रह्मा सरोजे रजनिकरकलाशेखरः शंकरोऽयं
दोर्भिदैत्यान्तकोऽसौ सधनुरसिगदाचक्रचिह्नैश्चतुर्भिः।
एषाऽप्यैरावतस्थस्त्रिदशपतिरमी देवि देवास्तथाऽन्ये
नृत्यन्ति व्योम्नि चैताश्चलचरणरणन्नूपुरा दिव्यनार्यः।।[8]

अर्थात् हे देवि, आकाश में कमल पर यह ब्रह्माजी है। चन्द्रकला को शिर पर धारण करने वाले यह शंकरजी है, धनुष, तलवार, गदा तथा चक्र चार चिह्नों वाली भुजाओं से दैत्यों का विनाश करने वाले यह भगवान विष्णु है। ऐरावत हाथी पर बैठे हुए यह देवराज इन्द्र है तथा अन्य यह देवता है। यह चंचल चरणों में बजते हुए नुपूरों वाली दिव्यांगनायें नाच रही है।
ऐन्द्रजालिक अपने जादू से अन्तःपुर में आग लगने के दृश्य को दिखाता है।

हर्म्याणां हेमशृङ्गश्रियमिव निचयैरर्चिषामादधानः
सान्द्रोद्यानद्रुमाग्रग्लपनपिशुनितात्यन्ततीव्राभितापः।
कुर्वन्क्रीडामहीध्रं सजलजलधरश्यामलं धूमपातै–
रेष प्लोषार्तयोषिज्जन इह सहसैवोत्थितोऽन्तःपुरेऽग्निः।।[9]

अर्थात् आग की लपटो से राज प्रसादों के स्वर्णशिखरों की शोभा सी धारण करती हुई घने उद्यान वृक्षों की चोटियों को मुरझा देने के कारण अत्यन्त तीक्ष्ण ताप को सूचित करती हुई, धुएँ के फैलाव में बने क्रीडा पर्वत को जल से भरे हुए काले बादलों के समान श्यामवर्ण करती हुई, दाह से पीड़ित स्त्रियों वाली यह अग्नि इस अन्तःपुर में सहसा उठ खड़ी (भड़की) हुई है।
सिद्ध महात्माओं की वाणी में लोगो का विश्वास था। इयं सिंहलेश्वरदुहिता सिद्धेनादिष्टा यथा योऽस्याः पाणिं ग्रहीष्यति स सार्वभौमों राजा भविष्यति।[10] अर्थात् इस सिंहलराज पुत्री (रत्नावली) को किसी सिद्ध पुरूष ने बतलाया कि जो इसका पाणिग्रहण करेगा वो सार्वभौम राजा होगा।
सिद्ध महात्माओं की इस वाणी को सुनकर मंत्री यौगन्धरायण किसी भी प्रकार रत्नावली को वत्सराज उदयन के लिए प्राप्त करने का प्रयास करता है। इससे स्पष्ट होता है कि उस युग में सिद्ध पुरूषों का बहुत सम्मान था।
विवाहित स्त्रियाँ धार्मिक स्वभाव की थी। वे व्रत–उपवास आदि धार्मिक कृत्यों का पालन करती थी। उपवास के पश्चात् वे स्वस्तिवायन के रूप में ब्राह्मणों को दान दिया करती थी। हर्ष ने उपवास से कृश वासवदत्ता के सौन्दर्य का वर्णन किया है।

[3] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 1/11 पृष्ठ 19
[4] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 1/16 पृष्ठ 24
[5] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 49
[6] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 52
[7] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 3/14 पृष्ठ 122
[8] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 4/11 पृष्ठ 156
[9] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 4/14 पृष्ठ 165
[10] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 178

कुसुमसुकुमारमूर्त्तिर्दधती नियमेन तनुतरं मध्यम्।
आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव।।[11]

अर्थात् फूलों जैसी सुकुमार मूर्त्ति एवं व्रतोपवासादि के कारण क्षीण मध्य भाग वाली महारानी वासवदत्ता कामदेव के पास में स्थित धनुर्लता जैसी प्रतीत हो रही है।
स्त्रियों की तत्कालीन स्थिति का ज्ञान भी रत्नावली नाटिका से होता है। उस समय बहुविवाह की परम्परा थी। पुरूष को अधिकार था कि वह अनेक पत्नियाँ रख सकता था। उदयन के अनेक विवाह हो चुके थे तब भी वह रत्नावली को अपनी पत्नी बनाने का इच्छुक था और अंत में वह उसे अपनी पत्नी बना लेता है।

अम्भोजगर्भसुकुमारतनुस्तदाऽसौ
कण्ठग्रहे प्रथमरागघने विलीय।
सद्यः पतन्मदनमार्गणरन्ध्रमार्गे–
र्मन्ये मम प्रियतमा हृदयं प्रविष्टा।।[12]

अर्थात् कमलगर्भ के समान सुकुमार शरीर वाली वह प्रियतमा नूतन अनुराग से प्रगाढ़ कण्ठालिंगन में उस प्रकार विलीन होकर शीघ्र गिरते हुए कामदेव के बाणों के छिद्र मार्गों से मानों मेरे हृदय में प्रविष्ट हो गई हो।
राज्य की उन्नति के लिये राजा का गुण सम्पन्न होना आवश्यक था। स्वामिभक्त सेवक, बुद्धिमान मंत्री, स्नेही मित्र, प्रजा का अनुराग, युद्ध में साहस, उत्तम गुणसम्पन्न पत्नी और कपट रहित धर्म का पालन ये सभी तत्त्व राजा की उन्नति के साधक है।

राज्यं निर्जितशत्रु योग्यसचिवे न्यस्तः समस्तो भरः
सम्यक्पालनलालिताः प्रशमिताशेषोपसर्गाः प्रजाः।
प्रद्योतस्य सुता वसन्तसमयस्त्वं चेति नाम्ना धृतिं
कामः काममुपैत्वयं मम पुनर्मन्ये महानुत्सवः।।[13]

अर्थात् राज्य के सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया है। सम्पूर्ण राज्यभार योग्य मंत्रियों को सौंप दिया है। भली भाँति पोषित प्रजा सभी प्रकार के उपद्रवों से मुक्त हो चुकी है। राजा प्रद्योत की पुत्री वसन्तसेना मेरी पत्नी है। सुखद वसन्तकाल है तथा वसन्तक जैसे तुम मेरे प्रिय मित्र हो। इस प्रकार ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे सब प्रकार से यह मदनमहोत्सव मेरा ही है मदन का तो नाम मात्र है।
प्रशासन का भी स्वल्प संकेत रत्नावली में मिलता है। प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजा होता था। वह सर्वअधिकार सम्पन्न और स्वच्छन्द होता था। उसकी इच्छा ही सम्पूर्ण कानून होती थी। राजा के आदेश पर ही युद्ध आदि होते थे। उदयन इसी प्रकार का राजा था। सेनापति रूमण्वान और विजयसेन उदयन को विन्ध्यदुर्ग में स्थित कौसल राज्य पर विजय का समाचार सुनाते हैं।

अस्त्रव्यस्तशिरस्त्रशस्त्रकषणोत्कृत्तोत्तमांगे क्षणं
व्यूढ़ासृक्सरिति स्वनत्प्रहरणे वर्मोद्वलद्विनि।
आहूयाजिमुखे स कोसलपतिर्भंगप्रतीपीभव–
न्नेकेनैव रूमण्वता शरशतैर्मत्तद्विपस्थो हतः।।[14]

अर्थात् अस्त्रों से इधर–उधर शिरस्त्रण फेंके जाने लगे, शस्त्रों के प्रहार से काटकर शिरा फेंके जाने लगे। क्षण भर में विशाल रक्त की नदी बहने लगी, आयुधों की परस्पर प्रहारों से खनखनाहट होने लगी, कवचों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगी। उस युद्ध के आरम्भ काल मे अपनी भागती हुई सेना को रोकते हुए मत्त हाथी पर बैठे हुये उस कौशल नरेश को ललकार कर अकेले रूमण्वान् ने ही सैकड़ो बाणों से उसका वध कर दिया।
प्रासादों की रचना में उद्यानों का विशेष महत्त्व था। भारतीय वास्तुविद्या में उद्यानों की रचना का विशेष स्थान था। रत्नावली में उदयन के राजप्रसाद में उद्यानों का वर्णन किया गया है। उद्यानों में मकरन्दोद्यान, कदलीगृह, नवमालिका इत्यादि का वर्णन किया गया है।

उद्यद्विद्रुमक्रान्तिभिः किसलयैस्ताम्रां त्विषं बिभ्रतो
भृंगालीविरूतैः कलैरविशदव्याहारलीलाभृतः।
घूर्णन्तो मलयानिलाहतिचलैः शाखासमूहैर्मुहु–
र्भान्ति प्राप्य मधुप्रसंगमधुना मत्ता इवामी द्रुमाः।।[15]

अर्थात् इस वसन्त के आगमन पर वसन्तावसर पाकर अंकुरित मूंगों की कान्ति वाले कोमल पत्तो से ताम्रवर्णी कान्ति धारण करते हुए मधुर भृंगावलि की गुंजार से अस्पष्टाक्षर भाषण की शोभा धारण किए हुए, मलय पवन के झकोरों से कम्पित शाखा समूह से बारम्बार झूमते हुए यह वृक्ष मतवालों जैसे प्रतीत हो रहे है।
मकरन्दोद्यान में अकाल समय पर खिलने वाली नवमालिका का भी वर्णन किया गया है। इस विद्या को उदयन ने श्रीखण्डदास जी द्वारा सीखा था। साधु रे श्रीखण्डदासद धार्मिक साधु। येन दत्तमात्रेणैव तेनदोहदेनेदृशी नवमालिका संवृत्ता येन निरन्तरोद्भिन्नकुसुमगुच्छशोभितविटपा उपहसन्तीव लक्ष्यते देवी परिगृहीतां माधवीलताम्।[16] अर्थात् शाबास श्रीखण्डदास धार्मिक शाबास। जिसके उस औषधीमात्र के देने से नवमालिका ऐसी हो गई है जिससे निरन्तर उत्पन्न फूलों के गुच्छों से शोभित शाखाओं वाली यह नवमालिका महारानी के द्वारा पकड़ी गई माधवीलता को लज्जित करती हुई सी दिखाई दे रही है।
इस प्रकार श्रीहर्षवर्धन की विशेषताओं को जितना विस्तार से कहा जा सके, उतना ही कम है। संस्कृत नाट्य–परम्परा में कालिदास के पश्चात् जिस कवि को लिया जा सकता है, वह हर्ष ही है, जिन्होंने शासन कार्य की अति व्यस्तता के मध्य भी अपनी साहित्यिक प्रतिभा का उद्भावन किया और उसके द्वारा सहृदयों के हृदयों को चमत्कृत किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय
2. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

[11] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 1/9 पृष्ठ 36
[12] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 4/2 पृष्ठ 142
[13] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 1/9 पृष्ठ 16
[14] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 4/6 पृष्ठ 150
[15] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय 1/17 पृष्ठ 30
[16] रत्नावली पं परमेश्वरदीन पाण्डेय पृष्ठ 59